

आजादी के गुमनाम महानायक बाबू बंधू सिंह का इतिहास

डा. नीलम सिंह

असिस्टेंट प्रोफसर, इतिहास
महाराज बलवन्त सिंह पी0जी0 कालेज,
गंगापुर (राजातालाब) वाराणसी

अमर शहीद बंधू सिंह देश के ऐसे शहीद का नाम है, जिन्होंने 1857 की क्रांति में अहम योगदान दिया। गोरखपुर और आसपास के क्षेत्र के युवाओं के दिल में स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई की ऐसी चिंगारी जगाई, जो बाद में ज्वाला बन गई। ऐसे युवाओं के देश प्रेम के जज्बे के कारण ही देश आजाद हुआ।

ऐतिहासिक तथ्यों व जनश्रुतियों के अनुसार अमर शहीद बंधू सिंह का जन्म चौरी चौरा क्षेत्र के डुमरी रियासत के बाबू शिवप्रसाद सिंह के घर 1 मई में 1833 को हुआ था उस समय पूरा जनमानस अंग्रेजी राज्य के शोषण बर्बरता एवं अन्याय के खिलाफ कसमसा रहा था 6 भाइयों में बड़े बंधू सिंह के मन पर इसका गहरा असर पड़ा। उन्ही दिनों बलिया के सैनिक मंगल पांडे ने बैरकपुर छावनी में फिरंगियों के विरुद्ध खुला विद्रोह कर दिया। इस खबर के यहां पहुंचते ही पूरा भोजपुरिया इलाका दहकने लगा। बंधू सिंह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सक्रिय हो गए। पूर्वजों की जुबानी, उस समय इस क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा था उसी समय अंग्रेजी अफसर की देखरेख में सरकारी खजाना बिहार से लादकर आ रहा था बंधू सिंह ने अपने सिपाहसालारों के साथ वह खजाना लूट लिया और पीड़ितों में बांट दिया। यहीं से वह अंग्रेजों के आंख की किरकिरी बन गये। इसके पश्चात बंधू सिंह ने अपने साथियों के साथ गोरखपुर पर हमला कर जिला कलेक्टर को मारकर अपना शासन कायम कर लिया। अन्य क्रांतिकारियों ने इस इलाके की दोनों प्रमुख नदियों घाघरा और गंडक पर कब्जा कर फिरंगियों के आवागमन का तंत्र तोड़ दिया। तब अंग्रेजों ने गोरखपुर पर आगमन के लिए नेपाल के राजा से मदद मांगी। राजा ने अपने प्रधान सेनापति पहलवान सिंह को फौज लेकर गोरखपुर रवाना कर दिया। पहलवान सिंह तो इस युद्ध में मारा गया लेकिन बंधू सिंह को भाग कर जंगलों में शरण लेनी पड़ी। अंग्रेजों ने उसके बाद डुमरी रियासत पर तीन तरफ हमले की योजना बनाई आजमगढ़ से चली इस फौजी का गगहा के ठाकुरों से मुकाबला हुआ जिसमें यशपाल सिंह और रक्षपाल सिंह दो भाई शहीद हुए। अंग्रेजी सेना डुमरी के नजदीक आ पहुंचे जहां मोतीराम के पूरब दुबियारी पुल के पास बंधू सिंह के भाइयों, करिया, दल हम्मन, तेजई व फतेह सिंह ने अंग्रेजों का मुकाबला किया परंतु वे उनकी सुसज्जित सेना के आगे नहीं टिक सके और मारे गए। बाद में अंग्रेजों ने बंधू सिंह का घर ध्वस्त कर रियासत जला डाली। देवी भक्ति बंधू सिंह गोरखपुर शहर के पूर्व में तात्कालिक शत्रुघ्नपुर के जंगल में छिपकर रहने लगे और अपने साथियों के साथ अंग्रेजों के सफाये में जुट गए।

छुपाकर हमला करने और बाद में घने जंगलों में छिप जाने से उन्होंने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। बताते हैं की बंधू सिंह अंग्रेज सिपाहियों के को मौत के घाट उतार देते थे। वर्तमान में जहां तरकुलही देवी का मंदिर है तब वहां जंगल था वही बंधू सिंह तरकुल के पेड़ के नीचे मिट्टी का पिंड बनाकर देवी की उपासना करते थे यहीं पर अंग्रेजों का सर कलम कर मां के चरणों में बलि चढ़ाते थे और अंग्रेजों से लड़ने की शक्ति मांगते थे और बाद में उनके पास के कुएं में डाल देते थे नरमुण्डों से वह कुआँ भर गया इतनी बड़ी तबाही से घबराए ब्रिटिश हुकूमतों ने अपनी बाटो और राज करो वाली नीति का सहारा लिया कहा जाता है कि अंग्रेजों के हमदर्द ने अपने एक आदमी निर्मल द्वारा धोखे से उनको शत्रुघ्नपुर के जंगल में गिरफ्तार करवा दिया। उनके साथी अहमद हसन को फैजाबाद ले जाकर नृशंसतापूर्वक बोटी बोटी काट डाला गया। जबकि 12 अगस्त 1858 को बंधू सिंह को गोरखपुर शहर के अलीनगर चौराहे पर स्थित बरगद के पेड़ के पेड़ पर सरेआम फांसी पर लटका दिया गया कहते हैं कि बंधू सिंह को

फांसी पर लटकाया गया तो फन्दा बार-बार टूट जाता था। गोरखपुर के चौरीचौरा क्षेत्र में स्थापित तरकुलहा देवी का मंदिर भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। इस मंदिर के महिमा की चर्चा जिले तक ही सिमित नहीं है बल्कि पूरे पूर्वांचल में इसकी ख्याति फैली हुई है। तरकुलहा देवी मंदिर का महत्व स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा हुआ है। ऐसी मान्यता है कि क्रांतिकारी बाबू बंधू सिंह को माता का विशेष आशीर्वाद प्राप्त था। वह यहां माता के समक्ष अंग्रेजों की बलि देकर उन्हें प्रसन्न किया करते थे। यहां आम दिनों में बकरे की बलि दी जाती है।

तरकुलहा देवी मंदिर का इतिहास

तरकुलहा देवी मंदिर का इतिहास चौरीचौरा तहसील क्षेत्र के विकास खंड सरदारनगर अंतर्गत स्थित डुमरी रियासत में स्थित है। कहा जाता कि बाबू बंधू सिंह तरकुलहा के पास स्थित घने जंगलों में रहकर मां की पूजा-अर्चना करते थे तथा देश को अंग्रेजों से छुटकारा दिलाने के लिए उनकी बलि मां के चरणों में देते थे। यहां 7 बार अंग्रेजों ने क्रांतिकारी बंधू सिंह को लटकाया था फांसी, पेड़ से फूटा था रक्त प्रवाह

बंधू सिंह से अंग्रेज अफसर घबराते थे। उन्होंने बंधू सिंह को धोखे से गिरफ्तार कर उन्हें फांसी पर लटकाने का आदेश दे दिया। जल्लाद ने बंधू सिंह को जैसे ही फांसी के फंदे पर लटकाया, फांसी का फंदा टूट गया। यह क्रम लगातार छह बार चला। जिसे देखकर अंग्रेज आश्चर्य चकित रह गए। तब बंधू सिंह ने मां तरकुलहा से प्रार्थना किया कि हे मां मुझे अपने चरणों में ले लो। सातवीं बार बंधू सिंह ने स्वयं फांसी का फंदा अपने गले में डाला। इसके बाद उन्हें फांसी हो सकी।

पूर्वांचल के आंचल में गाई जाने वाली यह पंक्ति किसी सिनेमा के गीत की का नहीं है यह बिरहा है जिसे अमर शहीद बंधू सिंह की स्मृति में गया जाता है सन 1857 की क्रांति के अलबेला नायक बंधू सिंह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ मध्य एवं उत्तर भारत में भड़के सशक्त जन विद्रोह के पूर्वांचल में अगुवाकार थे इतिहास प्रसिद्ध चौरीचौरा की डुमरी रियासत के बंधू सिंह संघर्ष की अनूठी मिशाल थे उनसे संबंधित ये प्रचलित पंक्ति आज भी लोगों के द्वारा गाई जाती है।

“सात बार टूटल जब,
फांसी के रसरिया,
गोरवन के अकिल
गईल चकराय।

असमय पड़ल माई
गाढे मे परनवा,
अपने ही गोदिया मे
माई

लेतु तू सुलाय।
बंद भईल बोली रुकि
गइली संसिया,
नीर गोदी में बहाते,
लेके बेटा के लशिया।”

अपनी गोरिल्ला शैली के कारण फिरंगियों में दहशत और आतंक का पर्याय देवी के अनन्य उपासक बंधू सिंह के कारनामे ने इस क्षेत्र में क्रांति की ज्वाला भड़का दी थी। अंततः अन्य क्रांतिकारियों की भांति मात्र 25 साल की उम्र में बंधू सिंह को भी फांसी पर लटका दिया गया।

तरकुलहा देवी मंदिर में चौत्र नवरात्र से एक माह का मेला लगता है। पूरे पूर्वांचल से लोग मेले में पहुंचते हैं। मुंडन व जनेऊ व अन्य संस्कार भी स्थल पर होते हैं। मनोकामना पूर्ण होने पर लोग बकरे की बलि देते हैं।

पेड़ से निकली थी रक्त की धारा... एक तरफ अलीनगर स्थित इस पेड़ पर 12 अगस्त 1857 को क्रांतिकारी बंधू सिंह को फांसी के फंदे पर लटकाया गया। उसी वक्त यहां से 25 किमी दूर देवीपुर के जंगल में उनके द्वारा स्थापित मां की पिंडी के बगल में खड़ा तरकुल का पेड़ का सिरा टूटकर जमीन पर गिर गया। इस टूटे तरकुल के पेड़ से रक्त की धारा निकल पड़ी। यहीं से इस देवी का नाम माता तरकुलहा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। मंदिर में भक्तों द्वारा सच्चे मन से मांगी गई हर मुराद पूरी होती है। यहां वैसे तो हमेशा श्रद्धालुओं का आना रहता है लेकिन चौत्र नवरात्र में यहां एक माह तक मेला चलता है।

स्थानीय निवासी राजेश कुमार जायसवाल ने कहा, बात 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से पहले की है। इस इलाके में जंगल हुआ करता था। यहां पास से गोर्रा नदी बहती थी। जो अब नाले में तब्दील हो चली है। यहीं समीप ही डुमरी रियासत के बाबू बंधू सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल रखा था। उन्होंने अंग्रेजों को देश से भगा देने के लिए ठान ली थी। अंग्रेजों को सबक सिखाने के लिए गोर्रा नदी के जंगलों में बाबू बंधू सिंह रहा करते थे। नदी के तट पर तरकुल (ताड़) के पेड़ के नीचे पिंडियां स्थापित कर वह देवी की उपासना किया करते थे। देवीपुर की यह देवी बाबू बंधू सिंह की इष्ट देवी थी। जो उनके शहीद होने के बाद तरकुलहा देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

फांसी की घटना के बाद यहां काफी लंबे समय तक हर वर्ष रामनवमी में उसे पर तरकुल के पेड़ से रक्त स्राव होता था इस कारण यहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जूटती। क्रांतिकारियों के लिए यह स्थल ऊर्जा केंद्र और धाम बन गया। वे यहां देवी मां से शक्ति मांगने आते थे। चुकी देवी मां की उत्पत्ति बंधू सिंह के बलिदान से हुई थी इसलिए यहां लोग बलिदान की मनौती मामने लगे मन्तते भी पूरी होने लगी। शायद यही कारण है कि रामनवमी पर लगने वाले मेले में पूर्वांचल के साथ ही बिहार, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि दूरदराज क्षेत्रों से श्रद्धालुओं की तादाद यहां बढ़ती जा रही है चौत्र नवरात्र से सवा महीने तक लगने वाले यहां के मेले में मसाला, सौंदर्य प्रसाधन लौह सामग्री, मिठाई, चूड़ी, खिलौने व प्रसाद आदि की हजारों दुकान लगती है मेले में नौटंकी सर्कस की धूम रहती है समस्त सुविधाओं से संपन्न यहां लगने वाला मेला धार्मिक स्थल के सिवाय पिकनिक स्पॉट भी बन गया है मेले की सुरक्षा व्यवस्था जिला प्रशासन के हवाले रहती है सुबह-शाम दिन हो या रात बलि चढ़कर प्रसाद रूप में गोشت पकाकर खाने वालों की यहां लंबी तादाद रहती है लगभग 5 एकड़ में स्थित मंदिर के पास ही बंधू सिंह का स्मारक बना है यही के करमहा गांव के नजीरन नामक एक मुस्लिम ने स्मारक के लिए अपनी जमीन दी है मंदिर में अभय ज्वाला व बंधू सिंह की याद दिलाते 7ताड़ वृक्ष आज भी मौजूद है इतने के बावजूद आजादी के पांच दशकों तक बंधू सिंह की शहादत सरकारी उपेक्षा का शिकार रही।

शहीद बंधू सिंह के परिजन बीजेपी नेता अजय सिंह ने कहा, जब बंधू सिंह बड़े हुए तो उनके दिल में भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आग जलने लगी। ऐसा उनके पूर्वजों ने बताया कि बंधू सिंह गुरिल्ला लड़ाई में माहिर थे, इसलिए जब भी कोई अंग्रेज उस जंगल से गुजरता, बंधू सिंह उसकी गर्दन धड़ से अलग कर सिर मां शक्ति स्वरूपा पिंडी पर चढ़ा देते। जब कई सैनिक जंगल में जाकर नहीं लौटे तो अंग्रेज यहां समझते रहे कि सिपाही जंगल में जाकर लापता हो जा रहे हैं।

इतिहासकार डॉ. दानपाल सिंह ने कहा, पहले तो अंग्रेज अफसर यह समझते रहे कि सैनिक जंगलों में जंगली जानवरों का शिकार हो रहे हैं। बाद में धीरे-धीरे उन्हें भी पता लग गया कि अंग्रेज सिपाही बंधू सिंह के हाथों बलि चढ़ाए जा रहे हैं। अंग्रेजों ने बंधू सिंह की तलाश में

जंगल में एक बड़ा तलाशी अभियान चला दिया। बहुत तलाश के बाद भी बंधू सिंह उनके हाथ नहीं आए। उस समय भी गद्दारों की कोई कमी नहीं थी। बंधू सिंह को सरदार मजीठिया की मुखबिरी के चलते अंग्रेजों ने पकड़ लिया। कोर्ट में उन्हें पेश किया गया फिर गोरखपुर के अलीनगर चौराहे पर सरेआम उन्हें फांसी दी गई।

मंदिर के पुजारी दिलीप त्रिपाठी ने कहा, बंधू को उधर फांसी का फंदा लगा और इधर तरकुल का पेड़ का सिरा टूट गया और खून की धारा काफी देर तक बहती रही। इन सबके बावजूद पूर्वांचल के अन्य शहीदों की भांति बंधू सिंह आजादी के पांच दशक तक उपेक्षित शाहिद की श्रेणी में शुमार थे। गोरखपुर गजेटियर में बंधू सिंह के फांसी के संदर्भ में दो लाइन के संक्षिप्त उल्लेख को छोड़ बंधू सिंह की शहादत का ब्यौरेवार लिखित इतिहास ना होना बंधू सिंह की जन्म भूमि का उपेक्षित पड़े रहना तरकुलही देवी धाम को अब तक राष्ट्रीय स्मारक ना घोषित करना पूर्वांचल के त्रासदी नहीं तो और क्या है जबकि जंगे आजादी का बिगुल फूकने वाले मंगल पांडे इसी धरती के लाल थे जंगे आजादी का सबसे गर्म क्षेत्र भी इसी को ही माना जाता है यही कारण है कि अवध यूनाइटेड प्रोविंस का यह क्षेत्र हमेशा से ही अंग्रेजों की कुदृष्टि का शिकार रहा है कहा जाता है कि उसे जमाने में यहां की सड़क का कोई ऐसा हर वृक्ष नहीं बचा था जिस पर क्रांतिकारियों को फांसी ना हुई हो लगातार उपेक्षा के बावजूद जनश्रुतियों नाटक नौटंकियों व लोकगीतों में बंदूक सिंह की शहादत आज भी यहां के असंख्य लोगों की प्रेरणा का स्रोत है बंधु सिंह पर बिरहा के वे गीत सात बार टूटल जब फांसी के रसिया इस अंचल में सदियों से लोकप्रिय है।

यह देश का इकलौता मंदिर है जहां प्रसाद के रूप में मटन दिया जाता हैं। बंधू सिंह ने अंग्रेजों के सिर चढ़ा के जो बलि कि परम्परा शुरू की थी वो आज भी जारी है। अंतर इतना है कि अब यहां पर मां को बकरे-मुर्गे की बलि चढ़ाई जाती है। उसके बाद मांस को मिट्टी के बरतनों में पका कर प्रसाद के रूप में बांटा जाता हैं। साथ में बाटी भी दी जाती है।

पुराने समय में देवी के कई मंदिरों में बलि कि परम्परा थी। समय के साथ साथ लगभग सभी जगह से यह परम्परा बंद कर दी गई। यहां तरकुलहा देवी के मंदिर में यह अब भी चालू है हालांकि इस पर अब काफी विवाद है। इसे बंद कराने के लिए कोर्ट में केस भी चल रहा है। 90 के दशक में बंधू सिंह करीबी वंशज 50 वर्षीय विनय कुमार सिंह विन्नू के नेतृत्व में नागरिकों ने "बंधू सिंह स्मारक समिति" गठित कर बंधू सिंह की उपेक्षा के खिलाफ संघर्ष छेड़ा। तब प्रदेश सरकार ने इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व व जन आस्था को देख कर इसे स्वाधीनता संग्राम से जुड़ा स्थल मानते हुए पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया तथा शहीद स्मारक, विश्रामालय, धर्मशाला, तालाब मंदिर चबूतरा आदि के सौंदर्यकरण के साथ ही मंदिर मार्ग का नामकरण बंधू सिंह मार्ग किया व प्रवेश द्वार बनवाया। विन्नू के प्रयासों से गोरखपुर महानगर के हालसीगंज में नगर निगम ने बंधू सिंह पार्क का निर्माण करवाया यही के कमर अहमद आजाद के संपादन में निकलने वाले बंधु सिंह नाम से साप्ताहिक अखबार ने तो बंदूक सिंह के शहादत की सरकारी उपेक्षा के खिलाफ अपनी कई सूत्रीय मांगों को अपना मिशन बना लिया। इन सब के बावजूद फिर तरकुलहा देवी धाम की अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। लगभग 5 एकड़ के परिसर में पहले यह मंदिर निजी हाथ में है जिनके यहां के विकास से कोई वास्ता नहीं है। यहां की अर्थव्यवस्था को लेकर जिला प्रशासन दो बार इस मंदिर पर रिसीवर भी नियुक्त कर चुका है। क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा निरंतर इस मंदिर क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण व अधिकरण की मांग की जा रही है। देवी मंदिर से लगभग 9 किलोमीटर उत्तर में स्थित बंधू सिंह की जन्म भूमि डुमरी कोर्ट की ओर आज तक सरकारी अमले में झांकने की कोशिश नहीं की आजादी के इतने वर्ष बीतने के बावजूद सरदार नगर क्षेत्र पंचायत का डूंमरी खास ग्राम बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। डुमरी खास ग्राम पंचायत के 14 टोले की लगभग 15000 की आबादी में 5000 मतदाता है। डुमरी खास ग्राम की मिट्टी में ही बंधु सिंह पले बढे थे। उस समय रियासत में 34 गांव निहित थे रियासत के मालिक बंधू सिंह के पिता थे। बंधू

सिंह के बगावत के बाद इस रियासत को अंग्रेजों ने तहस-नहस कर दिया। गांव आज तक स्वाधीनता के सही सुख का बोध नहीं कर सका।

इस गांव में बंधू सिंह की यादगार के नाम पर उनकी चाची का सती स्थान व तीन कुएं शेष बचे हैं जो बंधू सिंह की यादों को अपनी गहराई में छुपाए हुए हैं बंधू सिंह के घर की बची खुची यदा कदा जमीन में दबी दिखाई देती है चौरी चौरा व सरदार नगर क्षेत्र के नागरिक सरदार नगर क्षेत्र व सरदार नगर रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर बंधू सिंह नगर करने की मांग की लंबे समय से कर रहे हैं सरकार ने बंधू सिंह की कितनी भी उपेक्षा क्यों ना कि हो, इस क्षेत्र के लोगों की शहादत को आज भी अनमोल रत्न की तरह याद में संजोए है बंधू सिंह यहां की जनता के लिए किवदांती बन चुके हैं आज भी लोग उनकी शहादत याद कर रोमांचित होते |

संदर्भ

- 1— भूषण विनय —1857 का सिपाही विद्रोह
- 2— मजूमदार आर0सी0— भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास
- 3— सेन एस0एन0— 1857 की क्रांति
- 4— पाल विपिन चंद्र— भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास समाचारपत्र एवं पत्रिका
- 1— हिंदुस्तान 12 अगस्त 2024
- 2— दैनिक जागरण 12 अगस्त 2020
- 3— अमर उजाला 27 जून 2023
- 4— इंडिया न्यूज 12 में 2007